छछूंदर और चिड़िया का बच्चा

मार्जोरी

छछूंदर को एक चिड़िया का बच्चा पड़ा मिला.

वो अपने घोंसले से बाहर गिर गया था.

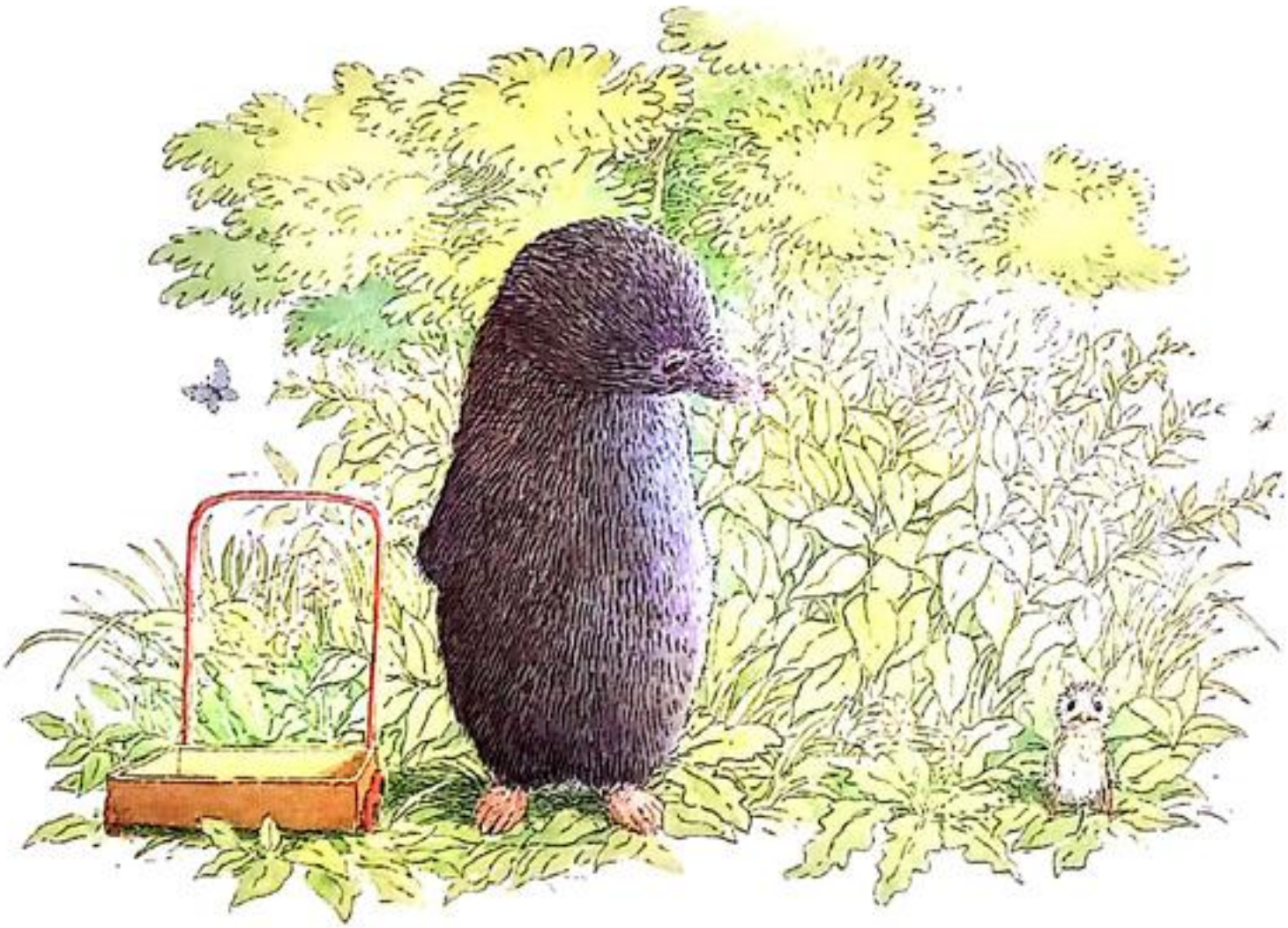

छछूंदर ने काफी देर इंतजार किया
पर कोई बड़ा पक्षी उस बच्चे की मदद के लिए नहीं आया,

इसलिए छछूंदर,
चिड़िया के बच्चे को अपने घर ले गया.

उसने चिड़िया के बच्चे के लिए
एक घोंसला बनाया.
"देखो, मम्मी!" उसने कहा.

"चिड़िया के बच्चे की देखभाल करना
बहुत मुश्किल काम है," माँ ने कहा.

"आमतौर पर चिड़िया के बच्चे मर जाते हैं,"
पिताजी ने कहा.
"मेरा पक्षी नहीं मरेगा," छछूंदर ने कहा.

उसके दोस्तों ने चिड़िया के बच्चे के लिए भोजन इकट्ठा किया.

माँ ने छछूंदर को चिड़िया के बच्चे को खाना खिलाना सिखाया.

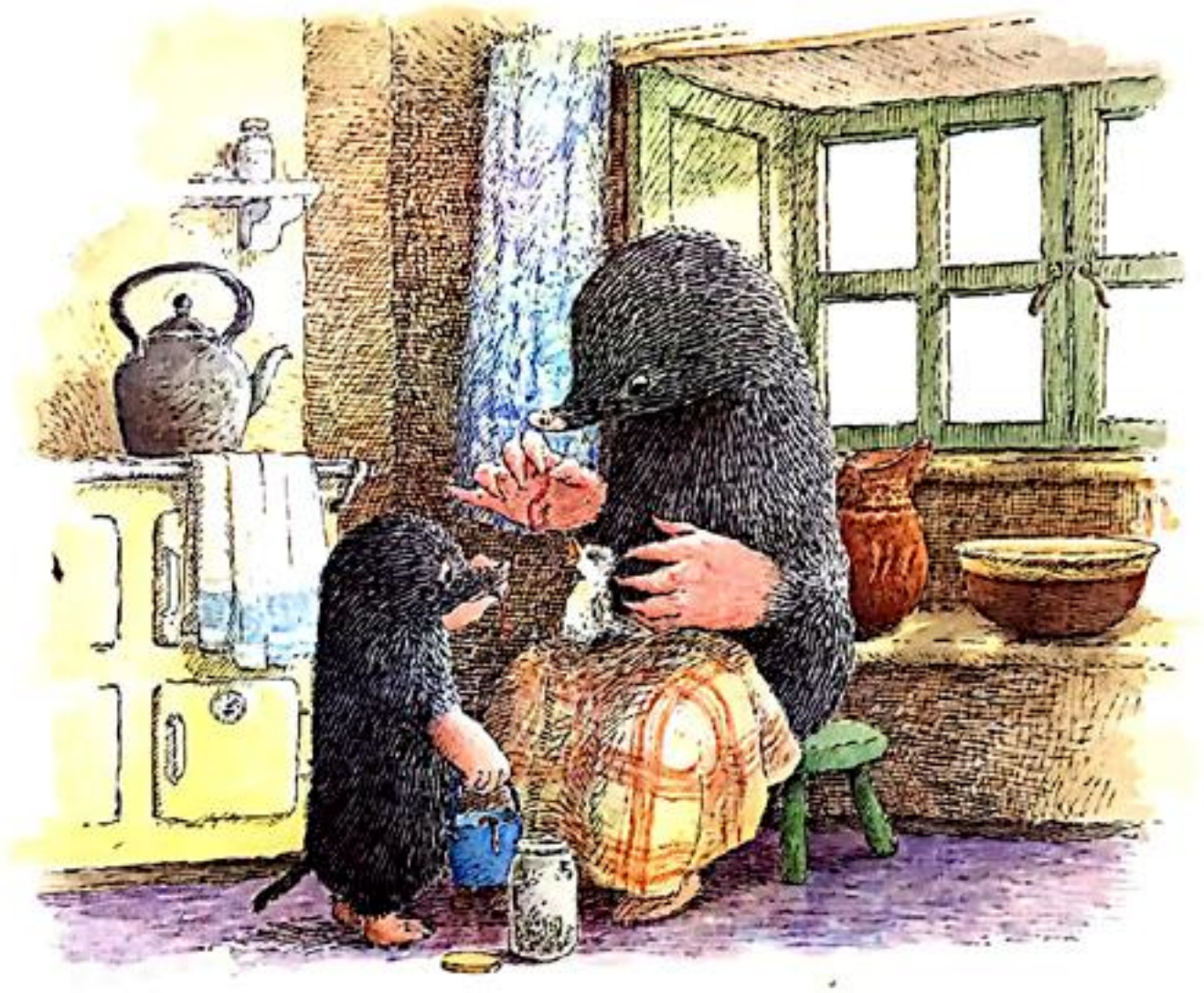

पक्षी जब भी चहकता तो छछूंदर उसे चुग्गा खिला देता.

उसका पक्षी मरा नहीं. वो बढ़ता ही गया!

"यह मेरा पालतू पक्षी है," छछूंदर ने कहा.

"यह एक पालतू पक्षी नहीं है. यह एक जंगली पक्षी है," माँ ने कहा.

पक्षी ने अपने पंख फड़फड़ाए.

"तुम्हारा पक्षी उड़ने की कोशिश कर रहा है," माँ ने कहा.

"नहीं!" छछूंदर रोया. "उसे उड़कर नहीं जाना चाहिए!"

छछूंदर को कुछ लकड़ी के पटरे और कीलें मिलीं.

उसने पिताजी का टूलबॉक्स उधार लिया.

"तुम क्या बना रहे हो?"
पिताजी ने पूछा.

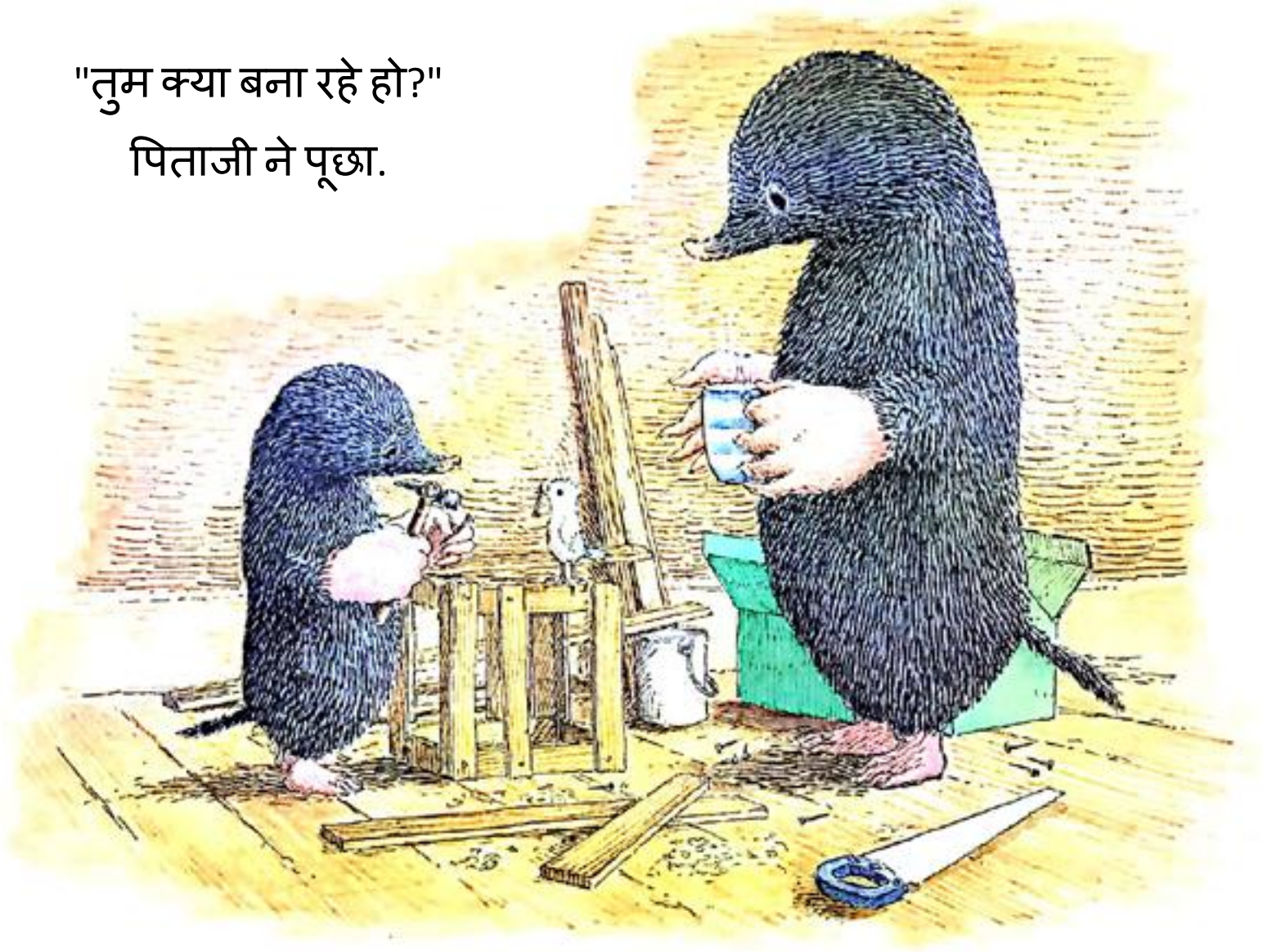

"मैं अपने पालतू पक्षी के लिए एक पिंजरा बना रहा हूं," छछूंदर ने कहा.

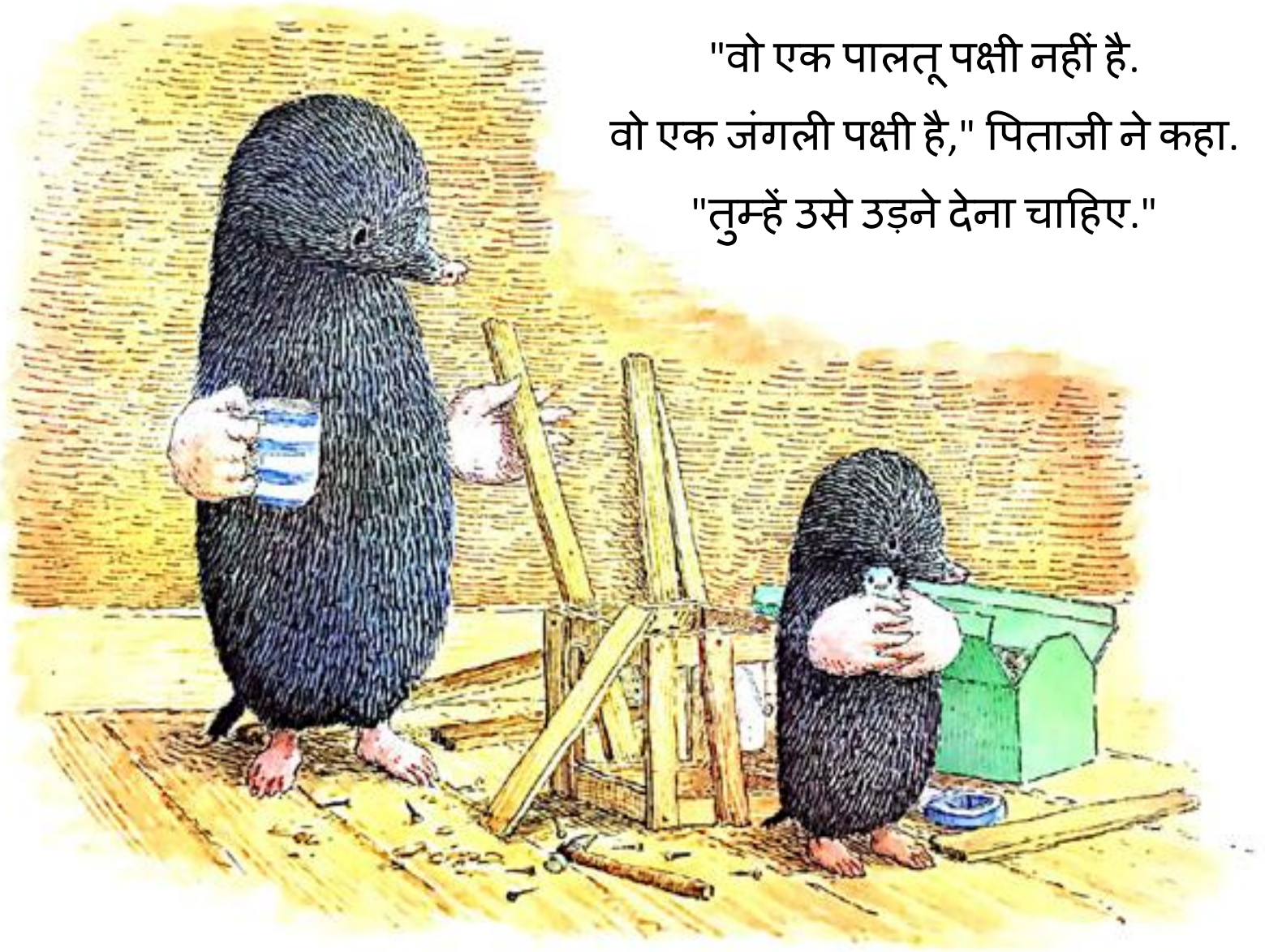

"वो एक पालतू पक्षी नहीं है.
वो एक जंगली पक्षी है," पिताजी ने कहा.
"तुम्हें उसे उड़ने देना चाहिए."

"नहीं!" छछूंदर चिल्लाया.

छछूंदर ने अपने पक्षी को नए पिंजरे में डाल दिया.

चिड़िया एकदम उदास हो गई.

माँ भी उदास थीं.

लेकिन छछूंदर ने अपने पक्षी को पिंजरे में रखा,

क्योंकि वो उससे बहुत प्यार करता था.

फिर एक दिन नानाजी उससे मिलने आए.

उन्होंने छछूंदर के पालतू पक्षी को देखा.

नानाजी ने कहा,

"चलो छछूंदर, कुछ देर के लिए टहलने चलते हैं."

नानाजी, छछूंदर को एक ऊंची
पहाड़ी की चोटी पर घुमाने ले गए.

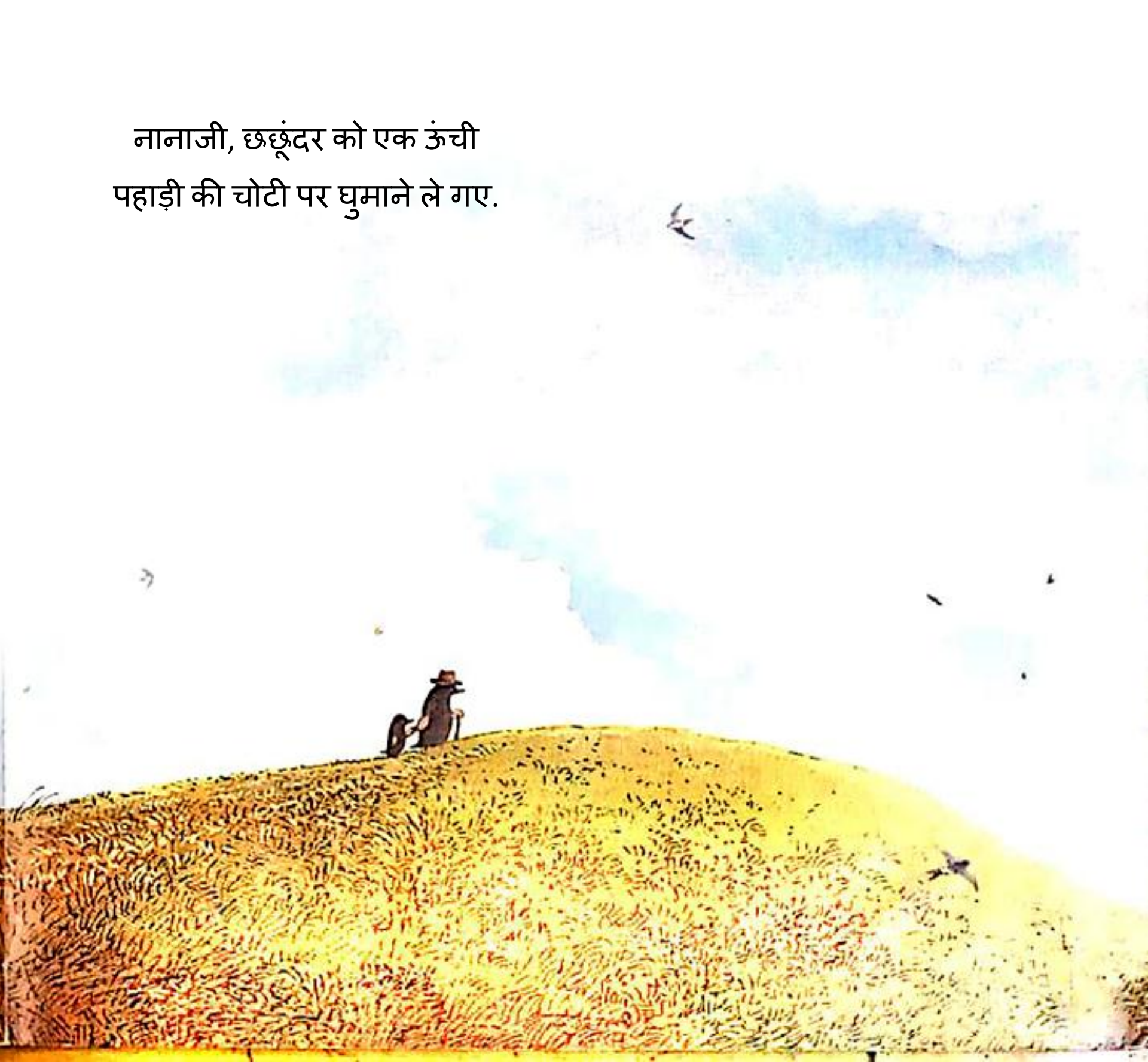

छछूंदर ने पहाड़ी से नीचे के पेड़ों को देखा.

उसे लगा जैसे तेज़ हवा उसे ऊपर उठाने की कोशिश कर रही हो.

"वाह! मैं उड़ रहा हूँ!" छछूंदर चिल्लाया.

"हाँ! लगभग," दादाजी ने कहा.

छछूंदर ने घर पहुंचकर अपने पक्षी को देखा.

पक्षी अभी भी अपने पिंजरे में उदास बैठा था.

पक्षी, छछूंदर के अंधेरे तहखाने में पड़ा था.

"पक्षी उड़ने के लिए ही होते हैं," छछूंदर ने कहा.

फिर उसने पिंजरे का दरवाजा खोला और अपने पक्षी को उड़ने दिया.

क्योंकि वो पक्षी से प्यार करता था इसलिए वो रो पड़ा.

अगले दिन छछूंदर जंगल में घूमने गया.

उसने अपने पक्षी को हवा में मुक्त उड़ते हुए देखा.

वो देख छछूंदर बहुत खुश हुआ.

अंत